5. 'नयी कहानी : सफलता और सार्थकता' पाठ के आधार पर नामवर सिंह के नयी कहानी सम्बन्धी चिंतन पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'रेणु: समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5212 **K**

Unique Paper Code : 2052103503

Name of the Paper : Hindi Aalochna

Name of the Course : **B.A. (Hons.) – DSC**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए। (10+10+10=30)

(क) जो भाव और विचार लोगों के हृदय को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं। ऐसे पतन के काल में लोग या तो आशिकी करते हैं या अध्यात्म और वैराग्य में मन रमाते हैं। जब साहित्य पर संसार क़ी नश्वरता का रंग चढ़ा हो, और उसका एक-एक शब्द नैराश्य में डूबा हो, समय की प्रतिकूलता के रोने से भरा और श्रृंगारिक भावों का प्रतिबिंब बन गया हो, तो समझ लीजिये कि जाति, जड़ता और हास के पंजे में फँस चुकी है और उसमें उद्योग तथा संघर्ष का बल बाकी नहीं रहा, उसने ऊँचे लक्ष्यों की ओर से आंखें बंद कर ली हैं और उसमें से दुनिया को देखने-समझने की शक्ति लुप्त हो गई है।

अथवा

मुक्त छंद को यहाँ उन्होंने जातीय मुक्ति के व्यापक संदर्भ से जोड़ा। तीसरी ओर छंद-विधान के आंतरिक स्वरूप को नये-नये

3. 'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद के साहित्य संबंधी चिंतन की विशेषताएँ रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

'नाटक' पाठ के आधार पर भारतेन्दु की आलोचना दृष्टि की समीक्षा कीजिए।

4. 'आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएं' पाठ के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की आधुनिकता और मानववाद संबंधी अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'तुलसी-साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

और असंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एक कठिन समस्या है। हमेशा यह खतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एक स्थूल, इतिवृत्तात्मक दृष्टिकोण न अपना ले। यह केवल हवाई खतरा नहीं है। पिछले वर्षों में हिन्दी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को 'सोशलॉजिस्ट' पहले समझता है-कलाकार बाद में। फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रच्छन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अन्तद्वन्द्वों द्वारा प्रदर्शित हो (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लम्बी सैद्धान्तिक बहसों के रूप में (बूंद और समुद्र, जयवर्धन)।

2. द्विवेदी युगीन हिंदी आलोचना के विकास पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वातंर्त्र्योत्तर हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए।

ढंग से व्यवस्थित करने की उनके मन में तीव्र उत्सुकता थी। आधुनिक काल के आरंभ में कवियों ने वाक्य-भंग के जरिये छंद को गति देने की महत्त्वपूर्ण कोशिश की, अर्थात् क्य को तोड़कर उसके अलग-अलग टुकड़ों को छंद की अलग-अलग पंक्तियों में बैठाया, और संप्रेषण के हित में यों एक तरह की नयी यति-व्यवस्था तैयार की। अँग्रेजी में इस शैली को Enjambment कहा गया है।

(ख) शास्त्र और काव्य, दोनों में ही देवता का नाम लिया जाता रहा, पर मनुष्य की बुद्धि ही अधिक प्रामाण्य समझी गयी, क्योंकि श्रुति वाक्यों में कौन-सा विधि-परक है और कौन-सा अर्थवाद, इन बातों के निर्णय की कसौटी मनुष्य बुद्धि को ही समझा जाता था। मनुष्य रूपी देवता का और भी व्यापक रूप मध्य काल के अन्त में आया, जब भगवान् के नर रूप की लीला ही सब प्रकार के साहित्य, शिल्प और नृत्य गीत का आश्रय बनी। भक्ति का पूरा

साहित्य भगवान् के नर रूप की लीला को आश्रय करके बना है, वहीं से वह प्रेरणा पाता है।

अथवा

कर्म-सौंदर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है और जिसका विधान कवि-परंपरा बराबर करती चली आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म-सौंदर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृ भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन, टॉल्स्टॉय के समय से चला है वह एक देशीय है। दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुँचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भिक्षा माँगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में कही कर्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्म क्षेत्र का एक मात्र सौंदर्य नहीं कहा जा सकता।

(ग) इतिहास अपने चरित्रों या कठपुतलों को इसकी स्वतन्त्रता नहीं देता कि वे स्वयं अपने को 'न हुआ' मान लें। फिर भी मन का ऐसा भाव लक्ष्य करने लायक और नहीं तो इसलिए भी है कि बह परवर्ती साहित्य पर एक मन्तव्य भी तो है ही-समूचे साहित्य पर नहीं कम-से-कम 'सप्तक' के अन्य कवियों की कृतियों पर (और उससे प्रभावित दूसरे लेखन पर) तो अवश्य ही। असम्भव नहीं कि संकलित कवियों को अब इस प्रकार एक-दूसरे से सम्पृक्त होकर लोगों के सामने उपस्थित होना कुछ अजब या असमंजस - कारी लगता हो। लेकिन ऐसा है भी, तो उस असमंजस के बावजूद वे इस सम्पर्क को सह लेने को तैयार हो गये हैं इसे सम्पादक अपना सौभाग्य मानता है।

अथवा

साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गम्भीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पात्रों की आकांक्षाओं